अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

# व्यक्तित्व एवं संवेगात्मक बुद्धि का कक्षागतअधिगम पर प्रभाव

**डॉ0 सुभाश सिंह**
प्रोफेसर, ि क्षक ि क्षा विभाग, आर0आर0पी0जी0कालेज, अमेठी (उत्तरप्रदे ।)

## सारसंक्षेप

*शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों– शिक्षक, छात्र व पाठ्यवस्तु में शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। श्रेष्ठ अध्यापकों के अभाव में सुयोग्य छात्रगण भी वांछित ज्ञानार्जन में सफल नहीं हो पाते हैं। अच्छी से अच्छी पाठ्यवस्तु भी निपुण अध्यापकों की अनुपस्थिति में प्राणहीन हो जाती है। शिक्षकगण शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करते हैं तथा उनको सर्वांगींण विकास के पथ पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं। शिक्षा व्यवस्था किसी भी प्रकार की क्यों न हो उसमें शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि होती है। शिक्षक शिक्षा प्रणाली का केन्द्र होता है तथा समस्त शिक्षा व्यवस्था उसके चारों ओर विचरण करती है। शिक्षक को शिक्षा व्यवस्था का प्राण कहना भी अनुचित न होगा, क्योंकि शिक्षक ही शिक्षा व्यवस्था को जीवन्त बनाता है।ि क्षा के दौरान माध्यमिक ि क्षा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है । माध्यमिक विद्यालयों की स्थिति तथा उनके कक्षागत अधिगम शिक्षण व अधिगम प्रक्रिया की स्थिति को जानने के उद्दे य से इस भाोध–पत्र को लिखने का प्रयास किया गया है। बताते चले कि यह भाोध पत्र सम्पन्न एक भाोध के दौरान इकट्ठा किये गये प्रदत्तों को आधार बना कर लिखा गयाा है। ाोध का भाीर्शक था – ''माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं संवेगात्मक बुद्धि का कक्षागत अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' है।*

*झमलूवतके रू व्यक्तित्व ,संवेगात्मक बुद्धि, कक्षागत अधिगम,सामाजिक अभियन्ता,ग्रामीण एवं भाहरी क्षेत्र।*

## 1–प्रस्तावना :

हमारा वर्तमान समाज और राष्ट्र परिवर्तन तथा विकास के एक नाजुक परन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षक का दायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है। शिक्षक ही देश के भावी नागरिकों अर्थात् युवा वर्ग के छात्र–छात्राओं के सम्पर्क में आता है तथा उन्हें अपने आचार–विचार तथा ज्ञान के अवबोध से प्रभावित करता है।

राष्ट्र के भावी विकास का सूत्रधार शिक्षक ही होता है। समाज की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

आदर्शों, आकांक्षाओं, मूल्यों आदि को वास्तविक रूप देने की जिम्मेदारी भी शिक्षक को वहन करनी होती है। वास्तव में शिक्षकगण अपने प्रयासों से भावी समाज की संरचना करते हैं इसलिए शिक्षकों को सामाजिक अभियन्ता ॅवबपंस म्दहपदममत) के नाम से भी जाना जाता है। राष्ट्रीय विकास में अध्यापकों के योगदान को देखते हुए अध्यापक को राष्ट्र निर्माता भी कहा जाता है। शिक्षक ही अपने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया द्वारा बालकों का सर्वांगींण विकास करके उन्हें समाज तथा राष्ट्र के चहुँमुखी विकास में भागीदार बनाता है। इसी प्रकार छात्र भी अपने शिक्षकों के गुणों एवं आदर्श से प्रभावित होकर समाज तथा राष्ट्र को विकास तथा समृद्धि के मार्ग को प्रशस्त करने में अपना अमूल्य योगदान देते हैं।

## 2–शोध का महत्व एवं प्रासंगिकता:

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तावित शोधकार्य के द्वारा न केवल इलाहाबाद (प्रयागराज) जनपद बल्कि सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के साथ–साथ देश के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों तथा शिक्षा की वास्तविक स्थिति का ऑकलन किया गया तथा शोध के उपरांत ऐसे सुझाव देने का प्रयास किया गया जिनका प्रयोग करके सरकार माध्यमिक विद्यालयों की स्थिति तथा उनके कक्षागत अधिगम शिक्षण व अधिगम प्रक्रिया के विकास को गति देने का प्रयास कर सकेगी । इसके अतिरिक्त माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के विभिन्न मनोवैज्ञानिक गुणों का भी अध्ययन करके उनके शिक्षण तथा शिक्षण कौशल को प्रभावी बनाया जा सकेगा जिसका सकारात्मक प्रभाव कक्षागत अधिगम प्रक्रिया पर पड़ेगा तथा छात्रों के सर्वांगींण विकास में सहायता मिल सकेगी। चूँकि माध्यमिक शिक्षा मानव विकास का एक महत्वपूर्ण सोपान होता है जिसके आधार पर बालक को भविष्य के लिए तैयार किया जाता है। इसी को दृष्टिगत रखते शोधार्थी अपने शोध में माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षकों के विभिन्न मनोवैज्ञानिक गुणों के अध्ययन का प्रयास करेगा।

शिक्षा प्रक्रिया में व्यक्तित्व तथा संवेग का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। इन गुणों का प्रयोग करके अध्यापक सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को अधिक अच्छे ढंग से सम्पादित कर सकते हैं। वास्तव में शिक्षक शिक्षा का महत्वपूर्ण घटक है। शिक्षक के बगैर शिक्षार्थी के सर्वांगींण विकास की संकल्पना नहीं की जा सकती। एक शिक्षक के रूप में, निर्देशक के रूप में, प्रबन्धक के रूप में, नियोजक के रूप में, मूल्यांकनकर्ता के रूप में एवं अभिभावक के रूप में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील होती है, अतः शिक्षक का व्यक्तित्व एवं संवेगात्मक बुद्धि शिक्षा के विभिन्न आयामों जैसे– पाठ्यक्रम, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, विद्यालय प्रबन्धन, शैक्षिक नियोजन, मूल्यांकन, निर्देशन तथा परामर्श इत्यादि को प्रत्यय रूप से प्रभावित करता है। दूसरे शब्दों में शिक्षक का प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं संवेगात्मक बुद्धि शिक्षक के अंदर वह क्षमता विकसित करता है जिसके आधार पर वह अपने विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान हेतु संवेगों का अधिक सृजनात्मक रूप से उपयोग करने की क्षमता का विकास कर सकेगा।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

इसके अतिरिक्त शिक्षक अपने इन मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर कक्षा में प्रभावशाली शिक्षण करके छात्र–छात्राओं में अधिकतम व्यवहार परिवर्तन ला सकेगा। व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि ऐसे मनोवैज्ञानिक गुण हैं जो शिक्षक के अंदर अपने कर्तव्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करते हैं जिसका प्रभाव विद्यार्थियों के विकास पर स्पष्टतः देखा जा सकता है। शोधकर्ता ने शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं संवेगात्मक बुद्धि का कक्षागत अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन के विषय में जानने की जो उत्सुकता हुई उसे ही शोध का क्षेत्र बनाया। इस शोध के निष्कर्षों एवं सुझावों के द्वारा निःसंदेह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को एक नयी दिशा मिल सकेगी जिसका सकारात्मक परिणाम विद्यार्थियों के कक्षागत व्यवहार परिवर्तन के साथ–साथ उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर निश्चित ही दृष्टिगोचर होगा।

प्रायः हम देखते हैं कि विभिन्न शोध अध्ययनों में शोधकर्ताओं ने छात्र–छात्राओं के विभिन्न मनोवैज्ञानिक गुणों को अपने शोध का क्षेत्र बनाया जिसके आधार पर वे विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक गुणों का उनके अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त इन मनोवैज्ञानिक गुणों को विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ तुलना की। निष्कर्षतः पाया गया कि विभिन्न सकारात्मक मनोवैज्ञानिक गुणों से ओतप्रोत छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि भी सकारात्मक पायी गयी। इसलिए यह कहा जा सकता है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में इन मनोवैज्ञानिक गुणों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है।

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन न करके माध्यमिक विद्यार्थियों के शिक्षकों के व्यक्तित्व तथा संवेगात्मक बुद्धि के अध्ययन का प्रयास किया गया है और यह जानने का भी प्रयास किया गया है कि इन मनोवैज्ञानिक गुणों से ओतप्रोत शिक्षकों के शिक्षण कार्य का प्रभाव विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर किस सीमा तक सकारात्मक पड़ता है। क्योंकि विभिन्न मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि यदि शिक्षकों के अन्दर विभिन्न सकारात्मक मनोवैज्ञानिक गुणों का यदि अभाव होता है तो इसका सकारात्मक प्रभाव कक्षागत अधिगम पर नहीं पड़ता है तथा हम शिक्षा के उस लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते हैं, जहाँ की कल्पना हमारे मस्तिष्क में होती है।

विद्यालयों में छात्र–छात्राओं की प्रगति, उनकी शैक्षिक उपलब्धि, पठन–पाठन में रुचि, कक्षा में उपस्थिति, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में उनकी भागीदारी, अनुशासन, समयबद्धता इत्यादि बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि शिक्षक/शिक्षिकाओं का उनके प्रति कैसा व्यवहार और दृष्टिकोण होता है। अध्यापक का व्यक्तित्व, उसका संवेग, उसका शिक्षण–प्रशिक्षण और उसका दृष्टिकोण स्वस्थ वातावरण के निर्माण के मुख्य तत्व माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त अध्यापक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाकर उनके सर्वांगींण विकास में अहम योगदान देते हैं। अतएव यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि विद्यार्थियों के अन्दर समस्त मनोवैज्ञानिक गुणों के परख के लिए शिक्षकों का भी मनोवैज्ञानिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

रूप से स्वस्थ होना अत्यन्त आवश्यक है। उपर्युक्त इन्हीं सभी बातों को आधार मानते हुए इस विशय पर शोधपत्रलिखना उचित समझा।

## 3–भाोध संप्रत्ययों का स्पष्टीकरण :

शोधपत्रमें आये संप्रत्यय और उनका स्पष्टीकरण इस प्रकार हैः–

1– माध्यमिक विद्यालय – उ0प्र0 सरकार द्वारा संचालित ऐसे सरकारी/ सहायता प्राप्त विद्यालय जहाँ पर कक्षा 9 से लेकर 12 तक की शिक्षा प्रदान की जाती है।

2– व्यक्तित्व – व्यक्तित्व, व्यक्ति में उन मनोशारीरिक अवस्थाओं का गतिशील संगठन है जो उसके पर्यावरण के साथ उसका अद्वितीय सामंजस्य निर्धारित करता है।

3– संवेगात्मक बुद्धि – संवेग, व्यक्ति को किसी कार्य को सीखने उसके सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक विकास को प्रभावित करता है। संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति के उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक गुणों का कक्षा–शिक्षण के दौरान प्रभावी व नियत प्रयोग से है।

4– शिक्षक – माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाओं से है।

5– कक्षागत अधिगम – विद्यालय में अनुकूल वातावरण के साथ सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को ही कक्षागत अधिगम कहा जाता है।

6– ग्रामीण क्षेत्र – यह क्षेत्र जिसकी जनसंख्या 10000 (दस हजार) से कम हो तथा वहाँ रहने वाले 50 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि कार्य में लगे हों। साथ ही साथ उस क्षेत्र की साक्षरता 50 प्रतिशत से कम हो। मनोरंजन, स्वास्थ्य, सुरक्षा, शिक्षा एवं रोजगार की समुचित व्यवस्था एवं अवसर सुलभ न हों ऐसे क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र की परिभाषा के अन्तर्गत आते हैं।

7– शहरी क्षेत्र – वह क्षेत्र जिसकी जनसंख्या 10000 (दस हजार) या इससे अधिक हो तथा वहाँ रहने वाले 50 प्रतिशत से कम लोग कृषि कार्य में लगे हों। साथ ही साथ उस क्षेत्र की साक्षरता 50 प्रतिशत से अधिक हो। मनोरंजन, स्वास्थ्य, सुरक्षा, शिक्षा एवं रोजगार की समुचित व्यवस्था एवं अवसर सुलभ हों ऐसे क्षेत्र शहरी क्षेत्र की परिभाषा के अन्तर्गत आते हैं।

शोधपत्र में प्रयुक्त प्रदत्त इलाहाबाद (प्रयागराज) जनपद के है। चूँकि इलाहाबाद (प्रयागराज)

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

जनपद का क्षेत्र व्यापक है जिस कारण से सभी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं का अध्ययन करना सम्भव नहीं था, इसलिए जनपद में स्थित 20 ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालय तथा 20 शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया तथा प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय से 10–10 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का चुनाव किया गया। इस प्रकार प्रतिद र्श की कुल संख्या 400 थी ।

## 4–शोध अध्ययन का उद्देश्य :

शोधकर्ता ने इस शोध के अध्ययन के उद्देश्यों का निर्धारण इस प्रकार किया हैः–

1– माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।

2– माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर का अध्ययन करना।

3– ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व में अन्तर का अध्ययन करना।

4– शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व में अन्तर का अध्ययन करना।

5– ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर का अध्ययन करना।

6– शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर का अध्ययन करना।

7– माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व तथा संवेगात्मक बुद्धि का कक्षागत अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

## 5–परिसीमन :

प्रस्तुत अध्ययर्न का क्षेत्र इलाहाबाद (प्रयागराज) जनपद के माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित है।

## 6–भाोध विधि :

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है । जिन आँकड़ों का संकलन प्रस्तुत भाोध अध्ययन हेतु किया गया है, उसका स्वरूप प्राथमिक है और इस प्रकार के

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

आँकड़ों का संकलन ऐसे मानक उपकरणों द्वारा ही किया जा सकता है।

## 7–जनसंख्या एवं न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या इलाहाबाद (प्रयागराज) जनपद में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक व शिक्षिका हैं।

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिकी न्यादर्श चयन विधि का प्रयोग किया गया है। इसके अन्तर्गत इलाहाबाद (प्रयागराज) जनपद में स्थित ग्रामीण क्षेत्र के 20 माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाओं तथा शहरी क्षेत्र के 20 माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाओं का चयन किया गया। इस प्रकार कुल 400 शिक्षक–शिक्षिकाओं को न्यादर्श के रूप में चुना गया। शिक्षक व शिक्षिकाओं का चयन यादृच्छिकी न्यादर्श चयन विधि द्वारा निम्नवत ढंग से किया गया।

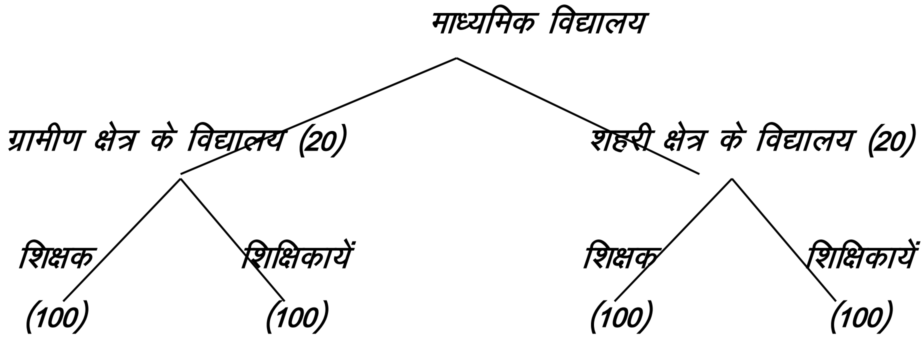


## 8–शोध उपकरण :

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व सम्बन्धी आँकड़ों के लिए **अरुण कुमार सिंह तथा अशोक कुमार की व्यक्तित्वमापनी सूची** एवं संवेगात्मक बुद्धि मापने के लिए **शुभ्रा मंगल की ज्मंबीमतश्े म्उवजपवदंस प्दजमससपहमदबम प्दअमदजवतल**का प्रयोग किया गया है।

## 9–निष्कर्ष :

परिकल्पना संख्या–1माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, का परीक्षण करने पर दोनों सार्थकता स्तरों क्रमशः 0.05 व 0.01 पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इस प्रकार शोध की सम्बन्धित शून्य परिकल्पना स्वीकृत कर ली गयी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विद्यालय में प्रभावशाली शिक्षण– अधिगम प्रक्रिया को लागू करने, उचित शिक्षण विधियों का प्रयोग करने व बच्चों के सर्वांगींण विकास के लिए शिक्षक व शिक्षिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है तथा इस भूमिका में शिक्षकों के व्यक्तित्व का अहम योगदान होता है। वर्तमान समय में प्रायः देखा जा रहा है कि अध्यापकों के व्यक्तित्व में गिरावट आ गयी है

**ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)**

जिसका नकारात्मक प्रभाव कक्षागत शिक्षण व बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ रहा है। शोधकर्ता ने माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक व शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व का अध्ययन किया। परिकल्पना के निरसन व सत्यापन में हालॉकि विद्यालय के शिक्षक व शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ। विद्यालय में नियुक्त अध्यापकों का व्यक्तित्व विद्यालय के अन्दर संचालित क्रियाकलापों का आधार स्तम्भ होता है तथा सम्पूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया इसी आधार स्तम्भ के इर्द–गिर्द केन्द्रित होती है। माध्यमिक विद्यालयों में नियुक्त अध्यापक तथा अध्यापिकायें अध्यापन प्रभावशीलता एवं बहुत से मनोवैज्ञानिक गुणों को धारण करते हैं जिसका प्रभाव उनकी शिक्षण प्रभावशीलता व शिक्षण के समय प्रयुक्त शिक्षण विधियों पर अनिवार्य रूप से दृष्टिगोचर होती है। इसलिए माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों व शिक्षिकाओं का यह मूलभूत उत्तरदायित्व होना चाहिए कि वे अपने व्यक्तित्व व अन्य मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर बच्चों के सर्वांगींण विकास में योगदान दें जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि की जा सके।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना संख्या (2) में शोधकर्ता ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक व शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर का पता लगाने का प्रयास किया जिसमें परिकल्पना की सांख्यिकीय विधियों द्वारा परीक्षणोपरान्त यह ज्ञात हुआ कि दोनों समूहों की सांवेगिक बुद्धि में किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं होता है।

चूँकि विद्यालयों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण है। साथ ही साथ अध्यापकों के अन्दर विद्यमान संवेगात्मक बुद्धि के महत्व को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता। क्योंकि इन्हीं सभी मनोवैज्ञानिक गुणों का प्रयोग कर अध्यापक विद्यालयों में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को सहज, सरल, बोधगम्य व विद्यार्थियों के अनुकूल बनाता है। शिक्षाविदों का विचार है कि शिक्षक के बिना शिक्षार्थियों के सर्वांगींण विकास की संकल्पना नहीं की जा सकती। इसी प्रकार संवेगात्मक बुद्धि के अभाव में शिक्षक की शिक्षण विधियों व शिक्षण तकनीकियों में व्याप्त धार कुंद हो जाती है और वह बच्चों के सर्वांगींण विकास में स्वयं को अक्षम महसूस करता है।

शोध में माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षक व शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में किसी भी प्रकार का अन्तर प्राप्त नहीं हुआ। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास व शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि करने के लिए अध्यापक व अध्यापिकाओं की जिम्मेदारी समान रूप से है। शिक्षक अपनी संवेगात्मक बुद्धि के आधार पर कक्षा में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को सरल व प्रभावशाली बनाते हैं जिसके परिणामस्वरूप छात्र बिना किसी कठिनाई व रुकावट के विषयवस्तु को आसानी से समझते व सीखते हैं तथा अपने दैनिक जीवन में सीखी हुई विषयवस्तु का अनुप्रयोग करते हैं जिससे उनका ज्ञान स्थायी हो पाता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

परिकल्पना संख्या (3) के अन्तर्गत शोधकर्ता ने ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व में सार्थकता का पता लगाने का प्रयास किया है। आँकड़ों के एकत्रीकरण व सांख्यिकीय विश्लेषण व गणना के उपरान्त यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक व शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं है। शोधकर्ता का मानना था कि वर्तमान समय में माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्रों के अध्यापक तथा अध्यापिकाओं में अच्छे व्यक्तित्व का अभाव होता है, ऐसा कुछ शोध अध्ययनों से भी ज्ञात होता है। अच्छे व्यक्तित्व के अभाव में ऐसे अध्यापक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को भी प्रभावशाली ढंग से संचालित नहीं कर पाते। इन्हीं सभी बातों को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता ने अपने इस प्रस्तुत शोध में उपर्युक्त परिकल्पना का निर्माण किया। यह परिकल्पना प्रस्तुत शोध में सम्बन्धित शोध उपकरणों से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर कसौटी की गयी जिसमें यह परिकल्पना सत्य सिद्ध हुई।

दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया का नेतृत्व करता है। उसके अन्दर प्रभावी मनोवैज्ञानिक गुणों का समावेश होना आवश्यक होता है। व्यक्तित्व जैसे मनोवैज्ञानिक गुण के आधार पर अध्यापक तथा अध्यापिकाएँ चाहे वे शहरी क्षेत्र के विद्यालय में कार्यरत हों या ग्रामीण क्षेत्र में, विद्यालय में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाकर अपने छात्रों का सर्वांगींण विकास करते हैं। इसके अतिरिक्त अपने मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर वह स्वयं को विद्यार्थियों के समक्ष आदर्श रूप में प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत परिकल्पना में ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाओं का व्यक्तित्व समान व आदर्श रूप में होता है, ऐसा सिद्ध होता है। इसी व्यक्तित्व जैसे मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर वे कक्षागत व अन्य पाठ्यसहगामी क्रियाओं के सकारात्मक विकास में अपना अमूल्य योगदान देते हैं।

परिकल्पना संख्या (4) के अन्तर्गत शोधकर्ता ने शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व में सार्थकता को ज्ञात करने का प्रयास किया। जिसके लिए दोनों समूहों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए क्रांतिक निष्पत्ति (ज) की गणना की गयी। ज के मान के आधार पर सार्थकता स्तरों 0.05 तथा 0.01 पर गणना की गयी जिसमें पाया गया कि दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

आज की शिक्षा व्यवस्था में प्रायः यह देखने को मिल रहा है कि माध्यमिक शिक्षा में लोगों के साथ कुछ चुनौतियाँ उभरकर सामने आयी हैं जिसमें शिक्षक अपने शिक्षण कार्य के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं जिसके कारण माध्यमिक विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा लुप्तप्राय सी हो गयी है। इस

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

समस्या के हालाँकि अनेक कारण हो सकते हैं परन्तु इस समस्या में जो मूलभूत कारण शोधार्थी को दिखाई पड़ता है– उसमें शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के कुछ मनोवैज्ञानिक कारण हैं इसमें भी प्रमुख रूप से उनके व्यक्तित्व में होने वाला उतार–चढ़ाव है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के समय शिक्षार्थियों को चुनौतीपूर्ण शिक्षा देकर उनका सर्वोत्कृष्ट विकास करने में शिक्षकों के व्यक्तित्व की अहम भूमिका होती है जिसके आधार पर वे विद्यार्थियों मे व्यावसायिक परिवर्तन लाकर उनके आंतरिक गुणों का परिमार्जन व परिवर्द्धन करते हैं।

शोधकर्ता के मन में यह प्रश्न उठा कि क्या माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षक व शिक्षिकायें अपने व्यक्तित्व के आधार पर विद्यार्थियों के सर्वोत्कृष्ट विकास में समान रूप से योगदान देते हैं अथवा नहीं क्योकि समाज में शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की जिम्मेदारियाँ अलग–अलग होती हैं तो क्या उनका व्यक्तित्व कक्षा में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को समान रूप से प्रभावित करता है? अतः सम्बन्धित परिकल्पना के परीक्षण से यह बात सिद्ध होती है कि शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक व शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व समान होते हैं।

परिकल्पना संख्या (5) में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर ज्ञात किया गया। सम्बन्धित परिकल्पना का सांख्यिकीय विधियों के आधार पर सत्यापन करने पर यह ज्ञात हुआ कि दोनों समूहों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

कक्षागत शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विद्यालयी वातावरण के साथ–साथ शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के बहुत से मनोवैज्ञानिक गुणा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शोधकर्ता ने ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक व शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के विषय में अध्ययन किया चूँकि संवेगात्मक बुद्धि किसी भी व्यक्ति की स्वयं तथा अन्य की आंतरिक भावनाओं, संवेगों तथा विचारों को समझने, व्यक्त करने तथा उन पर नियंत्रण रखने की योग्यता है तथा इन सभी गुणों का उसके क्रियाकलापों पर भी प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि भी कक्षा–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करती है। प्रायः कुछ शोध अध्ययनों द्वारा ज्ञात हुआ है कि महिलाओं तथा पुरुषों की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर होता है। शोधकर्ता ने इसी बात को ध्यान में रखते हुए इस परिकल्पना का निर्माण किया है कि यदि माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर होगा तो उनके द्वारा संचालित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भी अन्तर होगा। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि कक्षागत अधिगम में उतार–चढ़ाव देखने को मिलेगा परन्तु उपर्युक्त परिकल्पना के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है तथा दोनों ही समूह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में समान रूप से योगदान देते हैं।

**ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)**

परिकल्पना संख्या (6) में प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है का परीक्षण किया है। जिसमें दोनों समूहों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक व शिक्षिकायें समान संवेगात्मक बुद्धि को धारण करते हैं। एक प्रकार से संवेगात्मक बुद्धि मनुष्य की व्यक्तिगत तथा सामाजिक योग्यता होती है। जिसके द्वारा उसके अन्दर स्वजागरूकता, स्वनियमितता व आत्म प्रेरणा, विश्वसनीयता, स्वनियंत्रण, चेतनता इत्यादि आंतरिक गुणों का विकास होता है। शिक्षक तथा शिक्षिकायें चाहे वे जिस प्रकार या जिस क्षेत्र में अध्यापनरत हों, बच्चों के सर्वांगीण विकास करने में इन गुणों को उपयोग में लाते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में भाहरी क्षेत्र में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षक व शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि की तुलना करने का प्रयास किया गया, क्योंकि वर्तमान समय में कक्षागत अधिगम को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के लिए शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया जाना अति आवश्यक है, क्योंकि इन्हीं सब मनोवैज्ञानिक गुणों के द्वारा शिक्षक तथा शिक्षिकायें बच्चों के लिए सीखने का एक स्वस्थ वातावरण तैयार कर सकते हैं जिसका प्रभाव उनके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर पड़ता है और उनका सर्वांगींण विकास हो पाता है। शिक्षकों व शिक्षिकाओं के मनोवैज्ञानिक गुणों का सीधा प्रभाव शिक्षार्थियों के सीखने की क्रिया पर दृष्टिगोचर होता है। शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक व शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना इस बात का द्योतक है कि इस आधार पर कक्षागत् अधिगम को प्रभावी बनाया जा सके जिसका अधिकाधिक लाभ शिक्षार्थियों को प्राप्त हो सके।

परिकल्पना संख्या (7) के परीक्षण के लिए प्राप्त प्रदत्तों से पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व तथा संवेगात्मक बुद्धि का कक्षागत अधिगम के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं है। इस संदर्भ में शोधकर्ता का मानना है कि कक्षागत् अधिगम पर शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व तथा संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव पड़ता है। शिक्षक तथा शिक्षिकायें अपने व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि की सहायता से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी, सरल, सहज व रुचिकर बनाकर विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करते हैं। इसलिए शिक्षक व शिक्षिकाओं में अच्छे व्यक्तित्व निर्माण व परिपक्व संवेगात्मक बुद्धि का होना अति आवश्यक है जिसका प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है तथा विद्यार्थी कक्षा में विषयवस्तु को अपेक्षाकृत सरलता व सहजता से सीखते हैं। इसके अतिरिक्त कक्षा–कक्ष का वातावरण भी सुगम व पठन–पाठन के अनुकूल बना रहता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त आँकड़ों व विश्लेषण के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है बल्कि दोनों ही अपने अच्छे व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा कक्षा–शिक्षण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं तथा बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के विकास मेंअधिकतम योगदान देते हैं।

## 10–शैक्षिक निहितार्थ :

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष शैक्षिक रूप से महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध में पाया गया कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि तथा व्यक्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है चाहे वे शहरी अथवा ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में ही अध्यापनरत् हों। फिर भी शिक्षा से जुड़े व्यक्तियों को चाहिए कि वे कुछ ऐसी योजनाओं अथवा कार्यक्रमों को बढ़ावा दे जिससे अध्यापक तथा अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि जैसे मनोवैज्ञानिक गुणों का विकास कर सके जिससे कक्षागत अधिगम को रुचिकर व प्रभावशाली बनाकर अध्ययनरत् शिक्षार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में भी वृद्धि की जा सके।

प्रस्तुत शोध की शैक्षिक उपादेयता शिक्षा के साथ–साथ समाज व राष्ट्र के विभिन्न भागों में लाभकारी सिद्ध होगी। शोध से प्राप्त निष्कर्ष व परिणाम शिक्षा की चहुँमुखी प्रगति में योगदान दे सकेंगे। पुरातन से ही शिक्षा व साहित्य किसी भी समाज के प्रगति का मूलाधार रहे हैं तथा शिक्षा ही व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के विकास में योगदान देने वाले कर्णधारों के उद्भव का सशक्त साधन रही है। शिक्षा व शिक्षक ही राष्ट्र के भावी नागरिकों को शिक्षित व संस्कारवान बनाते हैं। शोधकर्ता ने अपने इस शोध में शिक्षकों के आवश्यक मनोवैज्ञानिक गुणों का अध्ययन किया है। शोधकर्ता का मानना है कि कक्षा में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी व रुचिकर बनाने के लिए शिक्षकों में संवेगात्मक बुद्धि व अच्छे व्यक्तित्व का समावेश होना आवश्यक है। सम्बन्धित शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि शहरी व ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के अध्यापक व अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि में समानता है फिर भी कुछ ऐसे कारकों की पहचान कर अध्यापक तथा अध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में वृद्धि करने के उपाय किये जाने चाहिए। साथ ही साथ माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं को शिक्षण व्यवसाय के प्रति रुचि का विकास करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। शिक्षा तथा विद्यालय में अध्यापिकाओं व अध्यापकों की अधिकतम भागीदारी तय की जानी चाहिए जिससे वे पूरे उत्तरदायित्व व जिम्मेदारी के साथ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुचारु एवं समुचित ढंग से संचालित कर सके।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

माध्यमिक शिक्षा शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ होती है तथा इस स्तर पर अध्ययनरत् किशोरावस्था के बालक तथा बालिकाओं का अधिकतम शैक्षिक विकास होता है। अतः शिक्षण संस्थाओं व शिक्षकों को भी इस स्तर की शिक्षा व्यवस्था को चुस्त–दुरुस्त रखने के लिए विशेष शिक्षण योजना व प्राविधानों की संरचना करनी होती है। शिक्षण अधिगम को प्रभावी व रोचक बनाने के लिए शिक्षकों को विशेष शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करने के साथ–साथ अपने मनोवैज्ञानिक गुणों को भी परिष्कृत व परिमार्जित करना पड़ता है। शिक्षकों के व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि का प्रस्तुत शोध में व्यापक रूप से अध्ययन किया गया। इन मनोवैज्ञानिक गुणों का अध्ययन कर तथा शिक्षकों को इस संदर्भ में प्रोत्साहित कर कक्षागत शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को शिक्षार्थियों के स्तरानुकूल बनाया जा सकता है। शिक्षकों के आन्तरिक व मनोवैज्ञानिक गुणों का विद्यार्थियों के कक्षागत अधिगम पर व्यापक रूप से प्रभाव पड़ता है तथा वे शिक्षकों द्वारा कक्षा में प्रयोग की गयी शिक्षण विधियों के अनुसार सीखने का प्रयास करते हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों द्वारा शोधकर्ता ने वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में शिक्षकों के मनोवैज्ञानिक गुणों यथा–व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि कक्षा की शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित कर सकते हैं, की शैक्षिक उपयोगिता का उल्लेख किया है। यह बात सर्वविदित है कि कक्षा शिक्षण के समय बच्चों के अधिकतम शैक्षिक विकास में शिक्षको के शिक्षण विधियों व प्रयुक्त शिक्षण सहायक सामग्री के साथ–साथ उनके विभिन्न मनोवैज्ञानिक गुणों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों को जन मानस के सम्मुख प्रस्तुत किया है। शोधपत्र का अभीश्ट है कि प्राप्त निष्कर्ष भावी शैक्षिक योजनाओं के क्रियान्वयन में उपयोगी सिद्ध होंगे।

## सन्दर्भ


1. **अब्राहम, आर० (1999)** : *'इमोशनल, इन्टेलीजेन्स इन ऑर्गनाइजेशन ए कान्सेप्चुवलाइजेशन'*, जेनेटिक, सोशल एण्ड जनरल साइकोलॉजी मोनोग्राफ्स 125(2), 209—224।
2. **आंस्टिन, ई०स्लोफ्सके, डी० एण्ड ईगन, वी० (2005)** : *'पर्सनालिटी, वेलबिइंग एण्ड हेल्थ कोरिलेट्स ऑफ ट्रेट इमोशनल इंटेलीजेन्स'*, पर्सनालिटी एण्ड इण्डीविजुअल डिफरेन्सेज, 547—558।
3. **बेस्टजॉनडब्ल्यू (1999)** : *'रिसर्चइन एजुकेशन'*, प्रिंटसहॉलऑफइण्डियालिमिटेड, न्यूदेलही।
4. **चौहान, एस०एस० (2005)** : *'एडवान्स एजूकेशनलसाइकोलॉजी'*, विकासपब्लिशिंगहाउस, न्यूदेलही।
5. **क्लैन्स, पी०आर० एण्ड वैयरमैन (1999)** : *'एसेसिंगइमोशनलइंटेलीजेन्स एण्ड इण्टरपर्सनलकम्पीटेंसइनस्टूडेण्ट'*, जार्जियास्टेट यूनिवर्सिटी, अटलाण्टा, जार्जिया।
6. **दुबे, रूचि (2007)** : *'रिलेशनशिपबिटवीनइमोशनलइन्टेलीजेन्स एण्ड एकेडमिक एचीवमेन्टऑफअण्डरग्रेजुएटस्टूडेन्ट्स'*, रिसर्च एण्ड स्टडीज, वाल्यूम—50।
7. **याटेस, जे०एम० (1999)** : *'दिरिलेशनशिपबिटवीनइमोशनल इंटेलीजेंस एण्ड हेल्थहैबिट्सऑफहेल्थ एजूकेशनस्टूडेन्ट्स'*, डिजर्टेशन, इण्टरनेशनल, 60—90।
8. **गुप्ता, एस०पी० (2008)** : *'व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ'*, शारदापुस्तकभवन, इलाहाबाद।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

9. **गुप्ता, एस०पी० (2009)** : *'उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'*, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
10. **गैरेट, हेनरीई० (2009)** : *'शिक्षा व मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग'*, कल्याणी पब्लिशर्स, नईदिल्ली।
11. **जायसवाल,सीताराम (1993)** : *'व्यक्तित्व का मनोविज्ञान'*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
12. **पाण्डेय, के०पी० (2002)** : *'शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी'*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
13. **श्रीवास्तव, निधि (2002)** : *'सृजनात्मकता पर व्यक्तित्व दबाव एवं संवेगात्मक बुद्धि के प्रभावका अध्ययन'*, अप्रकाशित डी०फिल० शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद ।
14. **सिंह, अरूण कुमार (2006)** : *'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ'*, भारती भवन पब्लिकेशन्स, पटना।

❍❍